कुदरती खेती (आत्मनिर्भर जैविक खेती): एक परिचय

(चौथा संस्करण -सितम्बर 2021)

रासायनिक खेती न केवल मंहगी और ज़हरीली है अपितु यह पोषक भी नहीं है। इस लिए कई लोग अपने खाने वाले गेहूँ में रसायनों का प्रयोग बंद कर देते हैं, परन्तु पाते हैं कि पैदावार घट जाती है। इस से उन्हें लगता है कि बिना रसायनों के प्रयोग के पैदावार घट जाती है। परन्तु 2009 से शुरू हुए कुदरती खेती अभियान ने यह पाया है कि बिना रसायनों, बल्कि बिना किसी बाहरी कम्पनी उत्पाद, के रासायनिक खेती के मुकाबले की बल्कि उस से ज़्यादा पैदावार लेना संभव है। पर इस के लिए खेती में कई तरह के छोटे-छोटे बदलाव करने होंगे। कुदरती खेती (या जैविक खेती) का अर्थ केवल यूरिया और कीटनाशकों का उपयोग बंद करना नहीं है। यह तो इस की न्यूनतम शर्त है। आत्मनिर्भर जैविक खेती में अच्छी पैदावार, रासायनिक खेती के बराबर की पैदावार लेने के लिए खेती में और भी कई तरह के बदलाव करने पड़ते हैं। इस के पूरे विज्ञान को समझना और लागू करना होगा; और ऐसा करना मुश्किल नहीं है। ऐसी खेती की शुरुआत के लिए इस पर्चे में पर्याप्त जानकारी है। अधिक जानकारी के लिए 'कुदरती खेती' नामक पुस्तिका भी उपलब्ध है।

कुदरती खेती में अच्छी पैदावार लेने के मूल सिद्धान्त व उपाय (उपायों का विवरण आगे आयेगा)

- एक दम से सारी ज़मीन में जैविक खेती शुरू न करें। थोड़ी ज़मीन से शुरुआत करें। बराबर की पैदावार लें, फिर आगे बढ़ें। जैविक खेती की शुरुआत उन फसलों से करें जिन का आप को अनुभव है, एक दम नई फसलों या बाग़ आदि से शुरुआत न करें।
- **मिट्टी में आँखों से न दिखने वाले लाखों सूक्ष्म जीवाणु मिट्टी की जान हैं। उन को मारना बंद करके उन की संख्या बढ़ानी है और उन को भोजन उपलब्ध कराना है। यह कुदरती खेती का मूल मन्त्र है।**
- रासायनिक खाद, कीटनाशकों, खरपतवार नाशी का प्रयोग और आग लगाना बंद करना है। बीटी/जीएम बीजों का प्रयोग भी जैविक खेती में वर्जित है। गंदे नाले का पानी और मुर्गी फार्म की खाद का प्रयोग भी नहीं करना।
- **हालाँकि अच्छी पैदावार लेने के लिए आगे दिए सभी काम ज़रूरी है, पर एकदम से ये सब न भी कर पायें तो भी कुरड़ी सुधार, सिंचाई सुधार, रासायनिक खेती की तरह फसल को अलग अलग समय पर खाद देना, बीज उपचार, फ़सल-मिश्रण, समय पर नलाई/निंदाई एवं कीट नियंत्रण जैसे काम तो शुरू से अवश्य करें।**
- किल्ले में ज़्यादा से ज़्यादा क्यारी बना कर पतली से पतली और ज़रूरत अनुसार सिंचाई करें न कि दिन गिन कर। पानी तभी दें जब नमी ऊपर से 2 इंच नीचे चली जाये।
- उपज और चारे को छोड़ कर बाकी कृषि अवशेष को वापिस मिट्टी में मिलाना है; न जलाना है और न भट्ठों को बेचना है।
- शुरुआत में जीवामृत का नियमित प्रयोग ज़रूरी है। इस के लिए गाय का हो या भैंस का पर गोबर हमेशा ताज़ा लें और मूत्र जितना पुराना, उतना अच्छा।
- गोबर खाद सही तरीके से बना कर पर्याप्त मात्रा में और सही तरीके से प्रयोग करें। खरीदी हुई गोबर की खाद को सुधार कर प्रयोग करें। अच्छी खाद चाय की पत्ती जैसी और यूरिया सरीखी छींटने योग्य होती है।
- जब-जब यूरिया का प्रयोग होता है तब-तब घनजीवामृत, गोबर की खाद, पशु मूत्र, थान की मिट्टी या अन्य जैविक खुराक का प्रयोग करें।
- मूत्र खेत में पहुँचना चाहिए न कि नालियों में या कुरड़ी में। प्रति एकड़ 50-60 लीटर मूत्र पानी के साथ दिया जा सकता है।
- साल में एक बार केवल ढैंचा या मूंग नहीं बल्कि सभी मौसमी फसलों की मिश्रित हरी खाद ज़रूर बोएँ।
- **जैव विविधता अच्छी पैदावार का आधार है। इसे बढ़ाना है। धान को छोड़ कर एक-फ़सली खेती नहीं करनी यानी एक समय में कई फ़सलों को मिला कर एक खेत में बोना है।**
- फ़सल चक्र में बदलाव करें। क्योंकि आम तौर पर जैविक किसान फसल को मंडी में न डाल कर सीधे ग्राहक को बेचता है इस लिए गेहूं/चावल के अलावा अन्य फसलों की बिक्री में भी दिक्कत नहीं होती। हर वर्ष हर किल्ले में दलहन लेने की कोशिश करें।
- भूमि नंगी न रहे। फ़सलों या कृषि अवशेषों से ढकी रहे।
- खेत में प्रति एकड़ कम से कम 5-7 विभिन्न प्रकार के पेड़ ज़रूर हों।
- खेत से पानी बह कर न तो जाए और न ही आए। पूरे खेत की हरी बाड़ भी हो।
- बीज अच्छा हो, उस की अंकुरण-जाँच और उपचार हो। बेमौसमी फ़सलें न लें। शुरुआत में नए बीजों का प्रयोग न कर के अपने

जाँचे परखे बीजों का प्रयोग करें। बाज़ारी/सरकारी बीजों का प्रयोग कर सकते हैं।

- बीज की मात्रा और बिजाई ऐसी हो कि फसल की पूरी बढ़वार होने पर भी हर पत्ते पर सूरज की पूरी रोशनी पड़े।
- बीजाई खूड/पंक्ति में करें ताकि खरपतवार नियंत्रण के लिए औज़ार प्रयोग किए जा सकें। उगते ही खरपतवार को निकालें।
- क़ुदरती खेती में कीड़ा और बीमारी कम ही लगती है। लगने पर घरेलू उपचार करने हैं।
- क्योंकि जैविक खेती में प्रयोग किये जाने वाले औजार/बीज आम दुकान पर नहीं मिलते इसलिए इन की पूर्व व्यवस्था करें।
- जैविक खेती किसान एक दूसरे के अनुभवों से सीखते हैं। इसलिए आपस में तालमेल ज़रूरी है।
- अच्छी पैदावार लेने के लिए ये सभी उपाय अपनाएं। इन उपायों बाबत अधिक जानकारी नीचे दी है।

कुछ ज़रूरी उपाय/विधियां:

1. **कुरड़ी की खाद बनाने का सही तरीका:** आम तौर पर कुरड़ी उठाते हैं तो यह गर्म होती है। यह इस बात का सबूत है कि खाद पूरी तरह से तैयार ही नहीं है। सही तरीके से तैयार न होने से फायदा भी कम होता है और खरपतवार भी ज्यादा होती है। इस लिए:(क) गोबर ऐसी जगह इकट्ठा किया जाए जहाँ सारा समय धूप न रहे, बारिश के समय पानी इकट्ठा न हो और न ही उस के ऊपर से पानी बह कर जाए। (ख)गोबर के ढेर में सही नमी बनाये रखना ज़रूरी है। इस लिये ऐसी जगह चुने जहां पानी की सुविधा हो। अगर मुट्ठी में दबाने से हाथ की उँगलियों में हल्की नमी न आए तो पानी की ज़रूरत है, आ जाए तो नमी ठीक है और पानी टपके तो ज़्यादा है। (ग) गोबर के ढेर की ऊंचाई और चौड़ाई 2.5-3 फ़ुट से ज़्यादा न हो। लम्बाई कितनी भी हो सकती है। (घ) अगर गोबर के ढेर को ढक कर रखा जाये तो और अच्छा रहता है। हर 2-4 हफ्तों में ढेर को पलटने से खाद जल्दी तैयार होती है। जीवामृत या डीकमपोज़र का प्रयोग करना भी उपयोगी रहता है। (ड़) खेत में डालने के फ़ौरन बाद इसे मिट्टी में मिला देना चाहिये पर गहरी जुताई न करके हल्की जुताई करें। (च) अच्छी खाद दानेदार, सुनहरी और सुगंध वाली होती है, चाय की पत्ती सी, ठंडी और छींटने योग्य।

2. **जीवामृत:** बनाने की विधि: ताज़ा गोबर 10 से 30 किलो या ज्यादा (उपलब्धता अनुसार; चाहे गाय का हो या भैंस का), मूत्र (जितना पुराना उतना अच्छा) 5-10 लीटर, गुड़ 1-2 किलो, किसी भी दाल का आटा 1-2 किलो तथा एक किलो सजीव मिट्टी (यानी ऐसे पेड़ के नीचे की या ऐसी जगह की ऊपरी 1 इंच मिट्टी जहाँ कीटनाशक न प्रयोग किये गये हों)। इन सब पदार्थों को 200 लीटर के ड्राम में अच्छी तरह मिला कर पानी भर कर बोरी (यह प्लास्टिक की न हो) से ढ़क कर छाया में रख दें। इस मिश्रण को दिन में 2-3 बार लकड़ी से चलाएं। तीन-चार दिनों में (मौसम के अनुसार यह अवधि घट-बढ़ सकती है) जब बुलबले उठने कम हो जाएँ तो समझें कि जीवामृत बन गया है। **प्रयोग विधि:**यह सामग्री एक एकड़ में सिंचाई के पानी के साथ चला दें। पानी की नाली के ऊपर ड्रम को रख कर धार इतनी रखें कि खेत में पानी लगने के साथ ही ड्रम ख़ाली हो जाये। फ़ौवारे से पानी देते हुये जीवमृत को छान कर प्रयोग करना चाहिए। अगर पानी नहीं देना हो तो जीवामृत को मिट्टी पर भी डाला जा सकता है। शुरू में हर पानी के साथ एक से ज्यादा ड्राम का प्रयोग करना चाहिए। जीवामृत का प्रयोग दही बनाने के लिए जामन लगाने जैसा है। इस के प्रयोग से खेत में सूक्ष्म जीवों की संख्या बढ़ती है। इस लिए यह ज़रूरी है पर यह अपने आप में पूर्ण ख़ुराक नहीं है और अच्छी गोबर की खाद की जगह नहीं ले सकता।

3. **बाहर से ली गोबर की खाद को सुधारने का तरीका:** आमतौर पर बाहर से ली गई गोबर की खाद सही तरीके से तैयार नहीं होती। उस को सुधार कर डालें वरना खरपतवार की समस्या गंभीर बन सकती है। इसलिए खाद खेत में डालने से 2 महीने पहले खरीद लें। अधपकी खाद का खेत के एक कोने मे 2.5 से 3 फ़ुट ऊँचा और इतना ही चौड़ा ढेर लगा लें। उसमें एक-एक फ़ुट पर नीचे तक लगभग 3 इंच चौड़े आड़े छेद कर लें। उन में हर हफ्ते एक-एक लीटर जीवामृत डाल दें। ढेर को ऊपर से पराली इत्यादि से ढक दें। एक दो महीने में अच्छी खाद तैयार हो जाएगी।

4. **ज़मीन ढक कर रखें और आग लगाना बंद करें:** आग लगाने का मतलब है नोटों की गड्डी को आग लगाना। आग न लगाने पर अतिरिक्त जुताई या कृषि अवशेष को इकट्ठा कर के एक ओर रखने पर होने वाला थोड़ा सा फालतू खर्चा कई गुणा ज्यादा फायदा करता है। कृषि अवशेष की जुताई तभी करनी चाहिए जब अगली फ़सल की बुआई में 2-3 हफ्ते की देरी हो वरना बीज का जमाव प्रभावित हो सकता है। एकत्रित पराल आदि कृषि अवशेषों की या तो खाद बना सकते हैं या इन की मोटी सानी काट कर के इससे भूमि को ढक सकते हैं। 2 से 4 इंच तक सानी की परत से खेत को ढकने से गेहूं, ईख आदि के जमाव में कोई दिक्कत नहीं होगी (दालों/बेलों की जमाव में दिक्कत हो सकती है)। चौड़े पते से जमाव पर जरूर असर पड सकता है। जमीन

ढकने से पानी की भी बचत होगी और खरपतवार भी कम होगा। अगर ऐसा न कर पाएँ तो कृषि अवशेष को एक ओर ढेर बना कर रख दें और समय समय पर उस पर जीवामृत का छिड़काव करते रहे। अगली फसल से पहले इस की जुताई कर सकते हैं।

5. **मिश्रित हरी खाद का प्रयोग ज़रूरी है।** सब तरह की मौसमी फ़सलों का ना कि केवल जन्तर का 10 से 20 किलो बीज लें। इन में तरह तरह के मौसमी अनाज, दालें, तिलहन, मसाले (सौफ, धनिया, मिर्च, मेथी इत्यादि) पत्तेदार सब्जियां और रेशे वाली फ़सलों के बीज हों। 30 से 45 दिन के वाद (फूल आने से, बीज बनने से और तना सख्त होने से पहले) या तो जुताई कर के जमीन में दबा दें या मेज़ मार दें। अगर जुताई करें तो दबाने और बुआई के बीच में 10-15-20 दिन का फर्क ज़रूर हो। मेज़ मारने के बाद तुरन्त बुआई की जा सकती है। अगर अलग से मिश्रित हरी खाद बोना संभव न हो तो खड़ी फ़सल में आखिरी पानी देने से पहले से ही बीज उपचार कर के एवं हल्की मिट्टी छिड़क कर मिश्रित हरी खाद का बीज बिखेरा जा सकता है।

6. **बिना बीज उपचार कोई बीज न बोएं:** बहुत सी बीमारियाँ बीज से ही होती हैं। इसलिए बीज उपचार से बीमारियों से बचाव होता है एवं जमाव भी अच्छा होता है। **विधियां:** 10 किलो गाय का गोबर और 10 लीटर मूत्र और 20 किलो दीमक की बाँबी, कीड़ियों की बाँबी या सजीव मिट्टी ले कर मिला लें और आटे की तरह गूंथ लें। इस में इतना पानी मिला लें कि सब बीज आसानी से अलग अलग हो जाएँ। इस में 60 से 100 किलो बीज मसल लें ताकि बीज पर इस मिश्रण की परत चढ़ जाये। **दूसरी विधि**: 50 ग्राम चूना (अगर पहले से बुझा हुआ न हो तो) 20 लीटर पानी में 24 घंटे के लिये भिगो कर रख दें। ठंडा होने के बाद 5 किलो गोबर और 5 लीटर मूत्र मिला लें। 24 घंटे बाद इस घोल में पोटली में बीज बांध कर 15-30 मिनट डूबो कर निकाल लें। उपचार के बाद बीज छाया में सुखा कर शीघ्र ही बोना चाहिये वरना मशीन से बिजाई में दिक्कत आ सकती है। पौध को भी इस बीजामृत में डूबो कर रोपाई करें। उपचारित बीज को सुखाते समय राख का छिडकाव करने से भी फायदा होता है।

7. **(धान के अलावा) अकेली फ़सल न ले कर, मिश्रित खेती करें।** केवल गेहूं बोना न तो पैदावार के लिये अच्छा है और न खाने के लिये। मिश्रित खेती मिट्टी की उत्पादकता बढ़ाने और कीटों का नियन्त्रण करने, दोनों में सहायक सिद्ध होती है। वैसे भी **हर किसान को कम से कम अपने परिवार के काम आने वाली ज़्यादा से ज़्यादा फ़सलें अपने खेत में उगानी ही चाहिए ताकि कम से कम उस के परिवार को तो ज़हर मुक्त भोजन मिले।** जहाँ तक सम्भव हो सके हर खेत में फ़ली वाली या दलहनी एवं कपास, गेहूँ, या चावल जैसी फ़सलों को मिला कर बोएँ। दलहनी या फली वाली फ़सलें नाइट्रोजन की पूर्ति में सहायक होती हैं। इस के अलावा मिश्रित खेती बीमारियों, कीड़ों, मौसम और बाजार की मार से किसानों को बचा सकती है। गेहूं के साथ चना, सरसों, धनिया, अलसी, मेथी, मसरी इत्यादि बो सकते हैं। केवल सरसों को अलग से काटें, शेष इकट्ठी कट जाती हैं।

8. **फ़सल चक्र के कुछ उदाहरण** <u>(मुख्य फसलों के साथ सह फ़सलें इन के अलावा होंगी):</u> खरीफ में एक साल धान, दूसरे साल मक्का या कपास या अरहर या बाजरा। रबी में एक साल गेहूँ तो अगले साल सब्जियाँ, आलू या सरसों या चना यानी एक साल धान व एक साल गेहूँ।

9. **बीमारियों और कीड़ों से बचाव के देसी तरीके:** जैविक खेती से मिट्टी और फसल की ताकत बढ़ेगी। इस से फसल की कीड़ों और बीमारियों से लड़ने की ताकत भी बढ़ेगी। ज़हर डालना बंद करेंगे तो खेत में मित्र कीटों की तादाद बढ़ेगी। मिश्रित खेती भी कीट नियंत्रण में सहायक होती है। फिर भी जरूरत पड़े तो कई घरेलू तरीकों से इलाज किया जा सकता है। <u>संजीवक</u>: एक किलो ताज़ा गोबर, 5 लीटर मूत्र, 50 ग्राम गुड़ और एक-एक किलो नीम, आक, और पापड़ी (करंज) के पते ले लें। गोबर और गुड़ को मिला लें और पतों को काट लें। सारी सामग्री को मटके में डाल कर ढक कर छाया में रख दें। हफ़्ते बाद छान कर संजीवक निकाल लें और बाकी ठोस सामग्री वापिस मटके में डाल दें। दोबारा केवल मूत्र डाल कर मटका भर लें। इस प्रकार 4 महीने तक हर हफ्ते छान कर संजीवक इकट्ठा किया जा सकता है। एक लीटर पानी में 15 से 20 मिली लीटर मिला कर छिड़काव कर सकते हैं। बिना कीट समस्या के भी इस का प्रयोग किया जा सकता है। संजीवक लम्बे समय तक रखा भी जा सकता है। ऐसे ही कई और तरह की वनस्पति को मिला कर भी कीट नियंत्रक बनाया जा सकता है। ऐसे सब पौधों जिन को गाय/बकरी नहीं खाती या जिन से दूध निकलता है या जिन से बदबू आती है या जिन का स्वाद कड़वा है या जो ज़हरीले हैं जैसे नीम, आक, धतूरा, मेन्थर, गुड़म्बा, कुशन्दी, भांग, सत्याबाशी, कन्डाई, बेशरम, बकाण, करंज, अरंड, तुम्बा, गाजर या कांग्रेस घास इत्यादि से भी दवाई बनाई जा सकती है। ऐसी विभिन्न प्रकार की पत्तियाँ/टहनियाँ इत्यादि 1-2 किलो के हिसाब से लेकर उन्हें काट/कूट कर मूत्र में उबाल लें। मूत्र इतना हो कि सब सामग्री उस में अच्छी तरह से डूब जाए। उबालते हुए ढक कर रखें। चार उबाले आने के बाद/आधा रह जाने के बाद/पत्ते पीले पड़ने के बाद, 24 घंटे तक ढक कर ठंडा होने दें। इस को छान कर 6 महीने तक रखा जा

सकता है। यही दवाई अगर बिना उबाले बनानी है तो 7-8 दिन तक मूत्र में ढक कर रख दें। इस दौरान दिन में 2-3 बार हिलाते रहें। पत्ते पीले पड़ने पर यह तैयार हो जाता है। बिना उबाले तैयार किया यह मिश्रण ज़्यादा दिन तक नहीं रखा जा सकता। प्रयोग विधि एक ही है। 16 लीटर की टंकी में आधा लीटर ये काढ़ा और इतना ही मूत्र मिला कर स्प्रे करें। जैविक छिड़काव के लिए अलग टंकी का प्रयोग करें।

इस से भी सुंडी नियंत्रण में न आए तो इन के साथ आधा-आधा किलो लहसुन और तीखी मिर्च तथा (अंतिम विकल्प के रूप में) तंबाकू को मिला कर कीट नियंत्रक की ताकत बढ़ाई जा सकती है। थोड़ा सा देसी साबुन भी घोल कर डाल दें। इस से यह काढ़ा पत्तों पर चिपक जाता है। विशेष तौर पर तना छेदक कीटों में इन का प्रयोग उपयोगी रहता है। मात्रा प्रति टंकी एक पाव।

यह ध्यान रहे कि फफूंद और कीट नियंत्रण के उपाय अलग अलग हैं। फफूंद नियंत्रण के लिए पुरानी/खट्टी लस्सी को 10 से 15 गुना पानी मिला कर छिड़काव कर सकते हैं। ज़्यादा पुरानी लस्सी में ज़्यादा पानी मिलाएं। फफूंद का लक्षण नजर आते ही छिड़काव करें और एक हफ़्ते बाद दोबारा छिड़काव करें। केवल खट्टी लस्सी से फफूंद नियंत्रण न हो तो खट्टी लस्सी में तांबे का टुकड़ा डाल कर 2-4 दिन रखने से इस की ताकत बढ़ जाती है। तांबा डली लस्सी को बच्चों और कुत्ते-बिल्ली से दूर रखें।

10. **खेत में प्रति एकड़ कम से कम 5-7 भिन्न-भिन्न प्रकार के पेड़ ज़रूर हों।** खेत के अन्दर पेड़ों की ऊंचाई 5-7 फ़ुट से ज़्यादा न होने दें। उनकी क़ांट-छांट कर के खाद बनाने या भूमि ढ़कने के लिये प्रयोग करें। पेड़ों के आस पास धूप-छांव चाहने वाली फसलें (हल्दी, अदरक, लोबिया, पेठा, धनिया, पुदीना, पपीता, अरबी, मूंगफली, बेल वाली सब्ज़ियां) ले सकते हैं। सहजन का पेड़ या अन्य जल्दी बढ़ने वाले पेड़ जरूर लगायें। अगर पूरे खेत की हरी बाड़ हो जाए तो बहुत अच्छा रहता है।

11. **कुछ अन्य उपाय:** एक साल पुराने गोसों को 50 लीटर पानी में भीगो कर रख दें। 4 दिन बाद गोसे निकाल लें। गोसों का पानी प्रति टंकी 2-3 लीटर मिला कर एक एकड़ में स्प्रे करें। 3:1:10 के अनुपात में कच्ची सब्ज़ियों एवं फलों के छिलके (जिन में प्याज़, लहसून, मिर्च आदि न हो), गुड़ और पानी ले लें। कुल सामग्री से डेढ़ गुणा बड़े ढक्कन बंद बर्तन में डाल कर ढक्कन बंद कर दें । प्रति दिन ढक्कन खोल कर गैस बाहर निकाल दें। यह ज़रूरी है वरना बर्तन फट सकता है। ऐसा एक महीने तक या जब तक गैस बनती रहे करना होगा। फिर अगले 2 महीने तक इस को ऐसे ही रखा रहने दें। उस के बाद इस को छान कर अर्क निकाल लें। एक लीटर पानी में एक ढक्कन अर्क मिला कर छिड़काव बढ़वार बढ़ाता है।

कुदरती खेती के मूल सिद्धांतों को अपनाते हुये खुद के प्रयोग करें और किसान-वैज्ञानिक बने। शुरुआत घरेलू प्रयोग से करें एवं धीरे धीरे अपना बाज़ार विकसित करें। कुदरती खेती अभियान बिना किसी बाहरी पैसे के, आपस के चंदे से एवं समाज सुधार के नज़रिये से काम कर रहा है। अपनी पूरी भूमि पर कुदरती खेती करने वाले किसान मिल कर इसे चला रहे हैं। आप भी इस में सहयोग करें। अपनी राय और अपने अनुभव भी हमें ज़रूर बतायें। अगर ऐसी खेती देखना चाहते हैं, प्रशिक्षण लेना चाहते हैं या 'कुदरती खेती' पुस्तिका की प्रति चाहिए तो तो निम्न सूत्रों से संपर्क करें (पुस्तिका https://archive.org/ पर Kudarti Kheti Third Edition नाम से भी उपलब्ध है): **हरियाणा के जैविक खेती के कुछ अनुभवी किसान जो अपनी पूरी ज़मीन पर कई सालों से आत्मनिर्भर जैविक खेती कर रहे हैं की (अधूरी) सूची:** जानकारी और सलाह लेने के लिये कृपया इन से शाम को ही सम्पर्क करें। **रोहतक** फूल कुमार, भैंणी मातो, 9992103197; ओम प्रकाश,9416096633; नारायण सिंह, लाखनमाजरा, 9416162230 (विशेष तौर पर कलम चढ़ाने के लिए); मास्टर रोहतास, सैमाण, 9813015059; अर्जुन नैन, अजायब, 7056760023;बंसी लाल, चिड़ी, 8307064782 **झज्जर** तेज सिंह, डीघल, 9812705504; भीम सिंह सेहलंगा, 9812177231; रामकिशन, बिरोहड़ 9991724311; अनिल कुमार, ढाणा, 9991089095; नरेश आर्य, भूरावास, 9996450879; प्रवीण आर्य, नौगांवा, 9991044972 **हिसार** राजेन्द्र सिंह उर्फ अनिल, रामायण, 9812775000; धर्मपाल, उमरा, 9991068080 **पानीपत** रणजीत सिंह, चमराड़ा, 9729737906 **करनाल** जितेन्द्र मिगलानी, फरीदपुर, 9215819222; जगत राम, नसीरपुर, 9315385200 **जींद** उदयभान, बेलरखा, 9416561553; मंजीत सिंह, खरक रामजी, 9802621306; सत्यवान, खरक गागर, 9467124919 **सोनीपत** चेत राम, दीपालपुर, 9466947522; सुरेन्दर दहिया, थाना खुर्द, 9254035882 **फतेहाबाद-सिरसा** सुरजीत सिंह बाना, भट्टू कलां, 9851402222 **भिवानी/दादरी** मनोज कुमार, गिग्नाऊ, 9812016008 **रेवाड़ी** सोमदत, भुरथला,कोसली, 9416995607; अजय कुमार, मुरलीपुर, 9466677725 **कुरुक्षेत्र** राज कुमार आर्य, मेहरा, 9416914051. **कुदरती खेती अभियान के संयोजक**: उदयभान सुपुत्र श्री लखमीचन्द, बेलरखा,जीन्द, 9416561553 **सलाहाकार:** राजेन्द्र चौधरी, भूतपूर्व प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, निवास: 904, सैक्टर 3, रोहतक 124001 फोन: 9416182061 rajinderc@gmail.com, **व्हाट्स ऐप्प संपर्क** मंजीत सिंह 9802621306.